।। श्री वीतरागाय नमः ।।

शांतिनाथ विधान

प्रेरणा

कविवर – सिद्धांतज्ञ – ओजस्वी वक्ता

आचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज

संकलन

श्रमणमुनि विज्ञसागर

कृति

शांतिनाथ विधान

शुभाशीष –

जैनाचार्य
श्री विरागसागर जी महाराज

प्रेरणा –

कविवर
आचार्य विनम्रसागर

संकलन/सम्पादन

श्रमण मुनि विज्ञसागर

प्रकाशक

धर्म प्रभावना ट्रस्ट न्यास, भिण्ड

प्राप्ति स्थान –

श्री देवेन्द्र कुमार जैन
बड़ी बजरिया, बीना
07580-223344

श्री विराग विद्यापीठ,
भिण्ड

सीपुर समता तीर्थ धाम
सीपुर
9828613614

प्रथमावृत्ति –
2200

पुनःप्रकाशन हेतु ज्ञानदान
राशि 10/- रु. मात्र

मुद्रक

मुकेश जैन मो. 9414555103

आर्यन एजेन्सीज्

इन्दिरा बाजार, अजमेरी गेट, जयपुर (राज.)

सर्वाधिकार सुरक्षित

जरुर पढ़ें और समझें

आज लोगों की ऐसी धारणा बन गई है कि शांतिनाथ विधान जब किसी के यहाँ मरण हो जाता है तब ही तेरहवें दिन किया जाता है यह लोगों का भ्रम है शांति विधान में भगवान शांतिनाथ के गुणों का विवेचन कर गुणगान किया गया है इसका मतलब यह नहीं कि शांति देने वाले भगवान एक ही हैं। शांतिनाथ भगवान् के समय से धर्म की धारा अक्षुण्ण गति से चली है यह धर्म की धारा निरंतर अक्षुण्ण बनी रहे ऐसी भावना को लेकर शांतिनाथ विधान बनाया गया है।

यह शांतिनाथ विधान कभी भी हम सभी लोग कर सकते हैं यदि कोई सूतक के बाद श्री सिद्धचक्र विधान करे या इन्द्रध्वज विधान करे तो और अच्छा है लेकिन शांतिनाथ विधान का प्रचलन प्रचुर मात्रा में होने के कारण लोग ऐसा न समझें कि ये शास्त्र प्रमाण है। शांतिनाथ विधान एक दिन का है और दूसरी बात भगवान का नाम भी शांति से जुड़ गया है।

शांतिनाथ विधान मुनि श्री विज्ञ सागर जी महाराज (बा.ब्र. रविन्द्र भैया) द्वारा संकलित किया गया है और इसमें आर्यिका विमलश्री (बा.ब्र. साधना दीदी) ने व आर्यिका विनहश्री (बा.ब्र. संगीता दीदी) द्वारा जो सहयोग किया गया वह भी सराहनीय है सभी लोग इस विधान का अनुष्ठान करके अपने जीवन में पुण्यार्जन करें और अपना जीवन सफल बनावें हमारा सभी के लिए शुभाशीर्वाद है।

आचार्य विनम्रसागर

मंगलाष्टक स्तोत्र

अरहन्तो भगवंत इन्द्र - महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्री सिद्धान्त - सुपाठकाः मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः,
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम्।।

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत - रत्नप्रभा -
भास्वत्पाद - नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध - सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।1।।

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति-श्री-नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा व चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।2।।

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रि-भुवनख्याताश्चतुर्विन्शतिस्,
श्रीमन्तो भरतेश्वर प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रति विष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिस्,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रि षष्टि पुरुषाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।3।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्री तीर्थंकर मातृकाश्च जनका, यक्षाश्च यक्षस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाधिपास्थितिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।4।।

ये सर्वौषधि ऋद्धयः सुतपसो, वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशला, येऽष्टौ विधाश्चारणाः।
पंचज्ञानधारास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धि ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।5।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः सम्मेद शैलेऽर्हताम्।

शेषाणामपि चोर्जयन्त शिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनय: प्रसिद्ध विभवा:, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।6।।
ज्योतिर्व्यन्तर - भावनामरगृहे मेरौ - कुलाद्रौस्तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा, वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहा:, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।7।।
यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जात: परिनिष्क्रमेण विभवो, य: केवलज्ञानभाक्।
य: कैवल्यपुर प्रवेश महिमा संभावित: स्वर्गिभि:,
कल्याणानि च तानि पंच सततं, कुर्वन्त नो मंगलम्।।8।।

इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषात्।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च, सुजनै-धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय रहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि।।9।।
।।इति मंगलाष्टकम्।।

सकलीकरण

शुद्धि मन्त्र

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभि:।
समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि
(सभी पात्र दाहिनी चुल्लू में जल लेकर मन्त्रित जल से स्वयं की शुद्धि करें।)

अमृतस्नान मंत्र

मन: प्रसत्यै वचस: प्रसत्यै काय: प्रसत्यै च कषाय हानि:।
सैवार्थत: स्यात्सकलीक्रियान्या मन्त्रैरुदारै: कृतिकल्पनांगा।।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय सं हं झ्वीं क्ष्वीं ठ: ठ: हं स: ह्रीं स्वाहा।

(इस मन्त्र से जल को मन्त्रित कर शरीर पर छिटककर शुद्धि करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नम: (अंगूठा शुद्ध करें)
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नम: (तर्जनी अंगुली शुद्ध करें)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः (मध्यमा अंगुली शुद्ध करें)
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः (अनामिका अंगुली शुद्ध करें)
ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठकाभ्यां नमः (कनिष्ठा अंगुली शुद्ध करें)
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः (दोनों हथेली सीधी फैलाकर नमन करें)
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हथेली उल्टी फैलाकर नमन करें)
ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा (सिर का स्पर्श करें)
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा (मुँह का स्पर्श करें)
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा (हृदय का स्पर्श करें)
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभि रक्ष रक्ष स्वाहा (नाभि का स्पर्श करें)
ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा (पैरों का स्पर्श करें)
ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा (शरीर पर पुष्प छोडें)
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा (वस्त्रों पर पुष्प छोडें)
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा (पूजा सामग्री के पास पुष्प छोडें)
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा (पूजा स्थल पर पुष्प छोडें)
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वं जगत रक्ष रक्ष स्वाहा (सब यजमानों पर पुष्प क्षेपण करें)

पात्रेऽर्पितं चन्दनमौषधीशं शुभ्रं सुगन्धाहृतचञ्चरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं न केवलं देहविकारहेतो:।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वांगशुद्धिं कुरु कुरु।

यह मन्त्र पढ़कर (1) मस्तक (2) शिखा, (3) ग्रीवा (4) कान (5) हृदय (6) दोनों भुजाएँ, (7) कलाई (8) नाभि और (9) पीठ में नौ जगह तिलक लगावें।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: असि आ उ सा सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु।
ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षा बंधन करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नम: स्वाहा।

यज्ञार्थमेवं सृजतादिचक्रेश्वरेण चिन्हं विधिभूषणानाम्।
यज्ञोपवीतं विततं हि रत्नत्रयस्य मार्गं विदधाम्यतोऽहम्।।

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।
(यज्ञोपवीत धारण करें)

4

दिग्बन्धन मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशात् समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्‌ठी से पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशात् समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्‌ठी से दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशात् समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्‌ठी से पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशात् समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्‌ठी से उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं ह्रः सर्व दिशात् समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्‌ठी से सभी दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

रक्षा मन्त्र

ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरिटिं-किरिटिं घातय - घातय पर विघ्नान् स्फोटय - स्फोटय सहस्र खण्डान् कुरु-कुरु पर मुद्रां छिन्द - छिन्द, पर मन्त्रान् भिन्द भिन्द क्ष्रां क्षः वाः वाः हूं फट् स्वाहा। (स्वयं के ऊपर पुष्प क्षेपण करें)

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष - कल्मषाय दिव्य - तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व-रोगापमृत्यु- विनाशनाय परकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्व क्षाम डामर विघ्न विनाशनाय **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्व शान्तिं तुष्टि पुष्टिं च कुरु - कुरु वषट् स्वाहा**

(विश्वशान्ति की कामना के साथ सभी दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें।)

जल शुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म-तिगिञ्छकेसरि महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारीनरकान्ता सुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः क्षीराम्भोधिजलं सुवर्णघटप्रक्षिप्तं नव-रत्नगन्ध पुष्पाक्षतादिबीजपूरितं पवित्रं कुरु कुरु झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं स्वाहा (जलाभिमन्त्रणम्)

ॐ ह्रीं इन्द्रोचिताभूषणानि अवधारयामि। (हार-मुकुट, यज्ञोपवीत आदि धारण करें।)

मंगल कलश स्थापन

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमानेकर्मणि .... श्रीवीरनिर्वाण संवत्सरे .... मासे .... पक्षे .... तिथौ ..... वासरेप्रशस्तलग्ने .... कार्यस्यनिर्विघ्न समाप्त्यर्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत - श्रीफलादि - शोभितं - मंगलकलश - स्थापनम् करोमि। श्रीं ३र्वी क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(मुख्य दिशानुसार ईशान कोण में मंगल कलश स्थापित करें)

दीपक स्थापन

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं सकललोकसुखाकर - मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें)

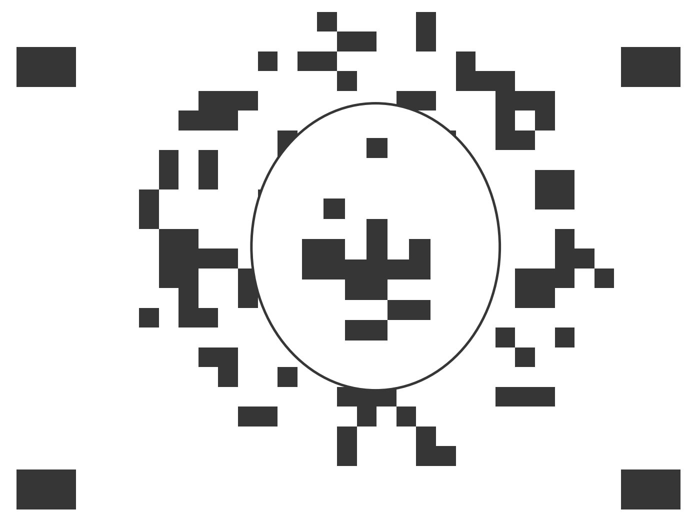

श्री शान्तिनाथ विधान भाषा (हिन्दी)

प्रस्तावना

अरिहन्त जिनेश्वर की अनुपम छवि, शान्तिसुधा धरके उरमें।
शिवनाथ निरञ्जन कर्मजयी बन, जाय बसे प्रभु शिवपुर में।।1।।

मुनिनाथ तपोनिधि सूरि सुधी, तपलीन रहें नित ही वन में।
श्रुत-ज्ञान सुधा बरसावत हैं, गुरु पाठकवृन्द सुभव्यन में।।2।।

रत्नत्रय की चिर ज्योति जगे, तप-ज्वाला कर्म विनाश करे।
भव - भोग शरीर विरक्त सदा, इन्द्रिय सुख की नहिं आश करें।।3।।

गन्धकुटी में विराजत प्रभु हैं, दिव्यध्वनि उनकी जो खिरी।
गणराज ने गूँथ के ज्ञान - सुमन, द्वादश अंगों की माल वरी।।4।।

मंगलमय लोक जिनोत्तम हैं, मंगलमय सिद्ध सनातन हैं।
मंगलमय सूरि सुवृत्त धनी, मंगलमय पाठक के गन हैं।।5।।

मंगलमय हैं असाधुजन, ज्ञान सुधारस लीन।
जिनप्रणीत वर धर्म है, मंगलमय स्वाधीन।।6।।

सब द्वीपों के मध्य में, जम्बूद्वीप अनूप।
लवण नीर - निधि सर्वतः, जहाँ खातिका -रूप।।7।।

पीछे धातकि - द्वीप है, द्वितीयद्वीप श्रुतिसार।
कालोदधि चहुँ ओर है, परिखा के उनहार।।8।।

पुष्कर नामक द्वीप है, कालोदधि के पार।
ताको आधो भाग ले, ढाई द्वीप सम्हार।।9।।

ढाई द्वीप त्रिकाल के, असंख्यात जिनराज।
वन्दनीय जे लोक के, वन्दों धर्मजहाज।।10।।

चन्द्रकलासम ज्योति मनोहर, अंग प्रभु की राजत है।
पद्म-पुनीत-प्रभा सम उज्ज्वल, देह मनोज्ञ विराजत है।।11।।

कण्ठ - मयूर सुकञ्चन नीरद, तुल्य सुशोभित अंग विभा।
तीर्थेश्वर चौबीस अलौकिक, रूप - विमुग्ध सुरेन्द्रसभा।।12।।

भूत भविष्यत वर्तमान के, चौबीसों जिनराज।
रत्नत्रय से भूषित सब ही, जग में रहे विराज।।13।।

अरिहन्त सिद्ध त्रिलोक पूजित, धर्मध्वज आचार्य को।
मुनिवृन्द के शिक्षा-प्रदायक, पूज्य पाठक आर्य को।।14।।

उन साधुओं को जो निरन्तर, ज्ञान-ध्यान-प्रवीन हैं।
तप शान्ति की शुचि साधना में, जो सदा तल्लीन हैं।।15।।

करके प्रणाम त्रियोग से मैं, शान्तिनाथ विधान को।
प्रारम्भ करता हूँ बढ़ाने, भक्ति-श्रद्धा-ज्ञान को।।16।।

लोक के सब गणधरों को, भक्ति श्रद्धा भाव से।
कुन्द-कुन्दादिक दिगम्बर, मुनिवरों को चाव से।।17।।

करता प्रणाम विनयसहित मैं, धर्मकी हो नित विजय।
निर्विघ्न हो यह पाठ पूरा, है यही मेरी विनय।।18।।

दोहा- शान्तिनाथ भगवान के, गुण हैं अपरम्पार।
वाचस्पति वर्णन करें, तो भी पाँय न पार।।19।।

(महात्म्य या फल)

यह शान्तिनाथ विधान क्यों कर, कब कहाँ किसने किया।
फल प्राप्ति जो उसको हुई, नरभव सफल उसने किया।।1।।

वृत्तान्त उसका मैं प्रसंग, सहित यहाँ वर्णन करों।
कल्याण हो सुनकर जगत का, ध्यान यह मन में धरों।।2।।

भरत क्षेत्र के आर्य-खण्ड में, भारत भू विख्यात सुदेश।
मथुरा नगर, वहाँ का शासक, सूर्यवंश का तिलक नरेश।।3।।

राजनीति में ,निपुण न्यायप्रिय, वीर प्रजा का पालक भूप।
साम, दाम से, दण्ड भेद से, शासन - संचालक अनुरूप।।4।।

एक बार जब दैवयोग से, दुर्विपाक ने किया प्रकोप।
ग्राम देवता ने क्रोधित हो, किया उपद्रव शान्ति विलोप।।5।।

महाभयंकर व्याधि विषम अति, फैलाई जब किन्नर ने।
दिन प्रतिदिन अति प्रबल वेग से, लोग लगे प्रतिदिन मरने।।6।।

रोग प्रताड़ित हो जनता ने, शासक ने मथुरा छोड़ी।
व्याधि ने काल - कृपाण लिए, सब जन की हिम्मत तोड़ी।।7।।

शुक्ल त्रयोदशी के दिन सहसा, सेठ सुमति जी आये।
बादल वर्षा देख सर्वतः, मन में अति हर्षाये।।8।।

मथुरा नगरी में प्रवेश कर, मिले नहीं नर - नारी।
सूनी नगरी देख-देख तब, हुए दुखित अतिभारी।।9।।

देख जिनालय, पूज जिनेश्वर, मुनिनायक युग वन्दे।
दर्शन वन्दन भक्ति विनय कर, निज में अति आनन्दे।।10।।

प्रश्न किया तब सेठ सुमति ने, नाथ उपाय बताएँ।
होगी शान्ति मुनीश्वर कैसे? विधि पूर्वक समझाएँ।।11।।

चारण ऋद्धी धारी मुनिवर, कहे वचन सुखदाई।
शान्ति नाथ जिन शान्ति विधायक, पूज रचो हर्षाई।।12।।

(इस विधान के जाप मंत्र का फल)

इस मन्त्र राज के जपने से, मन शुद्ध शान्त हो जाता है।
होते हैं विघ्न विनष्ट सभी, शुभ पुण्यकोष भर जाता है।।13।।

धन सम्पति अधिकार प्राप्त हों, यह तो है साधारण बात।
मन मन्दिर में ज्ञान सूर्य का, होता उज्ज्वल दिव्य प्रभात।।4।।

(विधान का समय)

इसका विधि विधान हे भव्यो! सुनो शुद्ध मन से धर ध्यान।
सोलह दिवसी शुक्लपक्ष में, प्रथम दिवस से करो विधान।।5।।

जिन पूजा के पूर्व यन्त्र का, संस्थापन पूजन शुभ कार्य।
सहस्रमन्त्र का जाप कीजिए, षोडशदिन तक नित अनिवार्य।।6।।

पूजा के मंगल विधान में, दीप धूप फल पुष्प सुगन्ध।
भक्ति भावयुत करो समर्पित, नाशक अशुभ कर्म का बन्ध।।17।।

(श्री शान्तिनाथ स्तवन)

संसार सागर में भटकते, प्राणियों को हे प्रभो,
आपके युगचरण ही शुभ, शरण दे सकते विभो।
दावाग्नि दुख - सन्तापकी, सर्वत्र धूँ - धूँ जल रही,
अनुराग माया मोह की, छलना निरन्तर छल रही।।1।।

क्रोधित भुजंगम के डसे, बहुप्राणियों के गात्र में,
गारुणी - विद्या प्रशम करती, यथा क्षण मात्र में।
प्रभु आपके चरणाम्बुजों का, ध्यान करते भक्ति से,
सब विघ्न बाधाएँ विलय, होतीं निजातम शक्ति से।।2।।

तप्त स्वर्ण के तुल्य आप के, दिव्य चरण का निर्मल ध्यान,
भव-सागर में पड़े प्राणियों के तारण हित बनता यान।
ज्यों यामिनी के घन - तिमिर में, लुप्त भू - आलोक हो,
उद्यद् दिवाकर रश्मियाँ, करतीं प्रकाशित लोक को।।3।।

जब तक नहीं होता उदय, रविरश्मि का संसार में,
तब तक कमलश्री सुप्त रहती, है सतत कासार में।
जब तक नहीं होती कृपा, भगवान के युगचरण की,
तब तक नहीं है टूटती, जंजीर जीवन - मरण की।।4।।

समरत्थ लोक - अलोक के, विज्ञान में जिनवर प्रभो,
त्रयछत्र की सुषमाविराजित, ज्ञान में दिनकर प्रभो।
पापक्षय क्षणमात्र में, पद पद्म के गुणगान से,
दर्पान्ध सिंह - गजेन्द्र भागें, सहज जिनके ध्यान से।।5।।

प्रत्यूष बेला के ललित उज्ज्वल, दिवाकर सा विमल,
जिननाथ भामण्डल तुम्हारा, सोहता स्वर्णिम कमल।
दिव्यांगनाओं के नयन मन, कर प्रफुल्लित मोहता,
त्रैयोक्य के तमतोम को, करता विदूरित सोहता।।6।।

बाधारहित शाश्वत निराकुल, अन्यतम सुख सम्पदा,
नाथ के चरणारविन्दों, के समागम से सदा।
प्राप्त करते भक्तजन हैं, भक्ति के आधार से,
आश्चर्य क्या यदि पार हों, संसार - पारावार से।।7।।

हे शान्तिनाथ जिनेन्द्र! तेरे, भक्त निज पाते कृपा,
भव दु:ख से सन्तप्त जन के, हेतु बन जाती प्रपा।
दूर होते दु:ख-दारुण, नाथ की शुभभक्ति से,
ज्यों घनतिमिर विध्वस्त होता, रवि किरण की शक्ति से।।8।।

श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र के, इस संस्तवन को भाव से,
जो भव्यजन पढ़ते निरन्तर, हैं विनय से चाव से।
परिणाम उनके हों विमल, सब विघ्न बाधाएँ टलें,
कल्याण मन्दिर के पथिक वे, मुक्ति के पथ पर चलें।।9।।

विधान प्रारम्भ

समुच्चय पूजा स्थापना

हे शान्ति प्रभो ! हे शान्तिप्रभो, मेरे मन - मन्दिर में आओ।
अघवर्ग - विनाशन - हेतु प्रभो, निज शान्त दिव्यछवि दर्शाओ। ।।1।।

कर्मों के बन्धन खुलते हैं, प्रभु नाम निरन्तर जपने से।
भव - भोग - शरीर विनश्वर तब, क्षण भंगुर लगते सपने से। ।।2।।

नरजन्म सफल हो जाता है, जब ध्यान हृदय में आता है।
आतम स्वरूप में लीन हुआ, भव-सागर से तर जाता है।। ।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त! सकलविघ्न शान्तिकर! मंगलप्रद! पंचमचक्रेश्वर ! द्वादशकामदेव! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त! षोडशतीर्थंकर! श्री शान्तिनाथ भगवन्! अत्र अवतर - अवतर सम्वौषट् इत्याह्वानम्! अत्र तिष्ठ - तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

इति मण्डलमध्योपरि पीठे स्थापनां कुर्यात्।

अष्टकम्

स्वर्णकलश में जल ले जो नित, जिनपद पूजन करते हैं।
निश्चय ही वे राजतिलक की, अनमोल सम्पदा वरते हैं।।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय जलं निर्व. स्वाहा।

केशर कर्पूर चन्दन द्वारा, जिनवर के चरणों का अर्चन।
जो करते हैं स्वर्गों तक में, सुरभित होते हैं, उनके तन।।
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्र: जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

जो पूजा चरणकमल की नित, निर्मल अक्षत से करते।
कामदेव सा पा शरीर वे, दीर्घ आयु जीवन धरते।।
ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्र: जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

जो कुन्द चमेली के द्वारा, करते प्रभु पदपंकज-पूजन।
वे पुष्पोत्तर विमान द्वारा, सम्पूर्ण सफल करते जीवन।।
ॐ रां रीं रूं रौं र: जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

अति उज्ज्वल स्वर्णपात्र में लेकर, आज्यपक्व नैवैद्य विमल।
अर्पित करते प्रभु चरणों में, पा जाते कल्पवृक्ष के फल।।
ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्र: जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

उज्ज्वल कर्पूर दीप द्वारा, जिनवर की सौम्य आरती से।
उद्भासित केवलज्योति जगे, उसमें सन्दीप्त भारती से।।
ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्र: जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय दीपं निर्व. स्वाहा।

चन्दन कर्पूर धूप द्वारा, जिनवर की शुभ्र अर्चना से।
पाऊँ निरोगतन कान्तिमयी, प्रभु की निशियाम वन्दना से।।
ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्र: जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय धूपम् निर्व. स्वाहा।

श्रीफल कदली इत्यादिक से, श्री जिनके चरणों का पूजन।
वे मनवांछित फल पाते हैं, पूजन जो करते है भविजन।।
ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्र: जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्टद्रव्यमय अर्घ्य विमल ले, शान्तिनाथ प्रभु का पूजन।
करते हैं जो भव्य शतेन्द्रों, से वन्दित हों दिव्य चरण।।
ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्र: जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाल

ज्ञानरूप ओंकार नमस्ते, ह्रीं मध्ये प्रभु शान्ति नमस्ते।
स्नातकर्षि अरिहन्त नमस्ते, दयाधर्म परिपूर्ण नमस्ते। ।।1।।

एकानेक-स्वरूप नमस्ते, श्री मच्चक्राधीश नमस्ते।
शान्तिदीप्ति शिवरूप नमस्ते, ज्ञानगर्भ निजरूप नमस्ते। ।।2।।

नानाभाषाबोध नमस्ते, आशापाश विहीन नमस्ते।
पावन-गुणगणगीत नमस्ते, अष्टकर्म-विध्वन्श नमस्ते। ।।3।।

तीर्थंकर पदपूत नमस्ते, पर संकल्प-विहीन नमस्ते।
मुक्तिवधु के कन्त नमस्ते, सम्यक्चारित दक्ष नमस्ते। ।।4।।

आत्मस्वभावे लीन नमस्ते, रत्नत्रय-संयुक्त नमस्ते।
आत्मबोध पूरिपूर्ण नमस्ते, उभयलोक सुखदाय नमस्ते। ।।5।।

करुणासागर नाथ नमस्ते, वाणी विश्वहिताय नमस्ते।
शान्तिनाथ परमेश नमस्ते, तीव्रगरल-हर-दक्ष नमस्ते। ।।6।।

कुरुवंशे अवतंस नमस्ते, ऋषिचित हर्षित करण नमस्ते।
कुलक्रमकारि जिनेन्द्र नमस्ते, सदा - विचित्रस्वरूप नमस्ते। ।।7।।

ह्रींबीजे वरशायि नमस्ते, धीर वीर भुवनेन्द्र नमस्ते।
विघ्नविनाशक शान्ति नमस्ते, प्राणिनाथ तव नाम नमस्ते। ।।8।।

भयहर्ता निर्भीक नमस्ते, दिव्यधुनी शिवरूप नमस्ते।
धर्मधुराधुर धीर नमस्ते, निजचैतन्ये लीन नमस्ते। ।।9।।

शान्तिजिनाष्टक को जो भविजन, धारे नित्य हृदय में।
सुख सम्पति ऐश्वर्य प्राप्त हो, संशय नहीं विजय में। ।।10।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

प्रथम वलय पूजा प्रारम्भ

स्थापना

हे शान्तिप्रभो ! हे शान्तिप्रभो, मेरे मन मन्दिर में आओ।
अघवर्ग-विनाशन-हेतु प्रभो, निजशान्त दिव्य छवि दर्शाओ। ।।1।।

कर्मों के बन्धन खुलते हैं, प्रभु नाम निरन्तर जपने से।
भव-भोग शरीर विनश्वर तब, क्षणभंगुर लगते सपने से। ।।2।।

नरजन्म सफल हो जाता है, जब ध्यान हृदय में आता है।
आतमस्वरूप में लीन हुआ भव-सागर से तर जाता है।। ।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त! सकलविघ्न शान्तिकर! मंगलप्रद! पंचमचक्रेश्वर ! द्वादशकामदेव! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त! षोडशतीर्थंकर! श्री शान्तिनाथ भगवन्! अत्र अवतर - अवतर सम्वौषट् इत्याह्वानम्! अत्र तिष्ठ - तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपामी)

प्राणिमात्र की बाधाओं के, हर्ता, कर्ता कर्मदलन।
हंबीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन। ।।1।।

ॐ ह्रीं अशोकतरुसत्प्रातिहार्यमण्डिताय अशोक तरुयुक्तपदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।1।।

प्राणिमात्र की बाधाओं के, हर्ता, कर्ता कर्मदलन।
भंबीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन। ।।2।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय सुरपुष्प वृष्टियुक्तपदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।2।।

प्राणिमात्र की बाधाओं के, हर्ता, कर्ता कर्मदलन।
मंबीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन। ।।3।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय दिव्य ध्वनि युक्तपदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।3।।

प्राणिमात्र की बाधाओं के, हर्ता, कर्ता कर्मदलन।
रंबीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन। ।।4।।

ॐ ह्रीं चामरोत्तोलनसत्प्रातिहार्यमण्डिताय चामरोत्तोलनयुक्तपदप्रदाय रम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।4।।

प्राणिमात्र की बाधाओं के, हर्ता, कर्ता कर्मदलन।
घंबीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन। ।।5।।

ॐ ह्रीं सिंहासनसत्प्रातिहार्यमण्डिताय सिंहासनयुक्तपदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।5।।

प्राणिमात्र की बाधाओं के, हर्ता, कर्ता कर्मदलन।
झंबीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन। ।।6।।

ॐ ह्रीं भामण्डलसत्प्रातिहार्यमण्डिताय भामण्डलयुक्तपदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।6।।

प्राणिमात्र की बाधाओं के, हर्ता, कर्ता कर्मदलन।
संबीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन। ।।7।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय दुन्दुभिप्रातिहार्ययुक्तपदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।7।।

प्राणिमात्र की बाधाओं के, हर्ता, कर्ता कर्मदलन।
खंबीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन। ।।8।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयसत्प्रातिहार्यमण्डिताय छत्रत्रययुक्तपदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।8।।

हभ मर-घझ सख बीजयुत, वर्णन कर भरपूर।
स्तोत्र अर्घ्य से पूजते, विघ्नवर्ग हों दूर। ।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्यमण्डिताय अष्टबीजमण्डनमण्डिताय सर्वोपद्रवशान्तिकराय महार्घ्यम् jjjj

द्वितीय वलय पूजा प्रारम्भ

हे शान्तिप्रभो ! हे शान्तिप्रभो, मेरे मन मन्दिर में आओ।
अघवर्ग-विनाशन-हेतु प्रभो, निजशान्त दिव्यछवि दर्शाओ। ।।1।।

कर्मों के बन्धन खुलते हैं, प्रभु नाम निरन्तर जपने से।
भव-भोग शरीर विनश्वर तब, क्षणभंगुर लगते सपने से। ।।2।।

नरजन्म सफल हो जाता है, जब ध्यान हृदय में आता है।
आतमस्वरूप में लीन हुआ वह भव-सागर से तर जाता है।। ।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त! सकलविघ्न शान्तिकर! मंगलप्रद! पंचमचक्रेश्वर ! द्वादशकामदेव! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त! षोडशतीर्थंकर! श्री शान्तिनाथ भगवन्! अत्रावतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ - तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

भक्तिभावयुत प्रभुपूजन को, इन्द्र जिनालय जावें,
तीर्थंकरपदवी के कारण, श्री जिनके गुण गावें।
श्री जिनप्रभु के पदपंकज की, पूजा इन्द्र रचावें,
दर्शन ज्ञान अनन्त सुखामृत बल विक्रम वे पावें।। ।। 1 ।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे विदेहादिशतैकसप्तति क्षेत्रार्यखण्डे भूत भविष्यद् वर्तमानार्हत्परमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखड्गोज्झित निदान बंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।1।।

अष्टकर्म से मुक्त निरञ्जन, सिद्धस्वरूपी राजें,
क्षायिकसम्यक् आदि गुणोत्तम, सीमातीत विराजें।
भूत भविष्यत् वर्तमान के, सिद्ध अनन्त निरञ्जन,
निजस्वरूप में लीन प्रभु का, करता पूजन वन्दन।। ।। 2 ।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैक सप्तति क्षेत्रार्यखण्डे भूत भविष्यद् वर्तमान सर्वसिद्धपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखड्गोज्झित निदान बंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।2।।

पञ्चाचार - विभूषित गुरुवर, आतम - ज्योति जगावें,
ज्ञानतपोनिधि कर्मदलन को, ध्यान - कुठार उठावें।
शान्तिसुधाकर की शुचिशीतल, रश्मि-प्रकाश प्रसारें,
संघ चतुर्विध के अधिनायक, काम - महारिपु मारें।। ।। 3 ।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैक सप्तति क्षेत्रार्यखण्डे भूत भविष्यद् वर्तमानसर्वाचार्यपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखड्गोज्झित निदान बंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।3।।

द्वादश अंगविभूषित मुनिवर, पाठक साधु सुधी के,
मानविमर्दन करते निर्मद, आत्म सुधारस पी के।
ध्यानाध्यन निरन्तर जिनके, शिव साधन दर्शावें,
इष्टानिष्ट - संयोगवियोगे, हर्ष - विषाद नशावें।। ।।4।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैक सप्तति क्षेत्रार्य खण्डे भूत भविष्यद् वर्तमानसर्वोपाध्यायपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखड्गोज्झित निदान बंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।4।।

ज्ञानाध्यनतप लीन निरन्तर, समता-स्वादक योगी,
विषयातीत-स्वरूप जितेन्द्रिय, आत्म-स्वरस के भोगी।
ध्यानकृपाण लिये मुनि योगी, कर्म-महारिपु मारें,
गुणश्रेणीयुत करें निर्जरा, निजगुण-रूप विचारें। ।।5।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैक सप्तति क्षेत्रार्यखण्डे भूत भविष्यद् वर्तमानसर्वसाधुपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखड्गोज्झित निदान बंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।5।।

पच्चीस दोषों से रहित, अष्टांग सम्यग्दर्शनम्।
अर्हन्त आगम गुरुवरों का, मैं करों नित अर्चनम्।। ।।6।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्धसम्यत्वामलतरखड्गोज्झितनिदान बंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।6।।

द्वादशांग जिनेन्द्रवाणी, ज्ञान-दोष-विवर्जितम्।
सम्यग्विभूषित आत्मज्योति, प्रकाश को शत वन्दनम्। ।।7।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यग्ज्ञानामलतरखड्गोज्झितनिदान बंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।7।।

गुप्तियाँ त्रय समिति पाँचों, और पञ्च महाव्रतम्।
तेरह प्रकार चरित्र सम्यक्, का करों मैं पूजनम्।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यक्चारित्रामलतरखड्गोज्झितनिदान बंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।8।।

ज्ञानावारक पञ्च प्रकृतियाँ, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्ति जिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्मबंध बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।9।।

दर्शनावारक कर्म प्रकृति नव, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी। ।।10।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्मबंध बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।10।।

वेदनीय विधि सुख दुःख दायक, प्रभु ने उभय विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।। ।।11।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्मबंध बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।11।।

अष्टाविंशति प्रकृति मोह की, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी। ।।12।।

ॐ ह्रीं प्रचण्डमोहनीय कर्मबंध बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।12।।

आयुकर्म की प्रकृति चार हैं, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी। ।।13।।

ॐ ह्रीं आयु कर्मबंध बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।13।।

नामकर्म की प्रकृति नवतित्रय, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी। ।।14।।

ॐ ह्रीं नामकर्मबंध बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।14।।

गोत्रकर्म की प्रकृति शुभाशुभ, प्रभु ने उभय विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी। ।।15।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मबंध बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।15।।

अन्तरायविधि पञ्च प्रकृतियाँ, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी। ।।16।।

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मबंध बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।16।।

दर्शनज्ञान चरण से भूषित, पञ्च परमपद पाऊँ।
शान्तिनाथ जिन के चरणों में, नितप्रति अर्घ्य चढ़ाऊँ। ।।17।।

ॐ ह्रीं पञ्चपरमेष्ठिपदप्रदाय दर्शनज्ञानचारित्रकारकाय अष्टकर्मनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।17।।

तृतीय वलय पूजा प्रारम्भ

स्थापना

हे शान्तिप्रभो ! हे शान्तिप्रभो, मेरे मन मन्दिर में आओ।
अघवर्ग-विनाशन-हेतु प्रभो, निजशान्त दिव्यछवि दर्शाओ। ।।1।।

कर्मों के बन्धन खुलते हैं, प्रभु नाम निरन्तर जपने से।
भव-भोग शरीर विनश्वर तब, क्षणभंगुर लगते सपने से। ।।2।।

नरजन्म सफल हो जाता है, जब ध्यान हृदय में आता है।
आतमस्वरूप में लीन हुआ भव-सागर से तर जाता है।। ।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त! सकलविघ्न शान्तिकर! मंगलप्रद! पंचमचक्रेश्वर ! द्वादशकामदेव! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त! षोडशतीर्थंकर! श्री शान्तिनाथ भगवन्! अत्रावतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम् अत्र तिष्ठ - तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलि क्षिपामि)

भवनवासी व्यतरों के, ज्योतिषी स्वर्गान्त के।
आहूत इस जिनयज्ञ में, इंद्रादि सब विश्वांत के।।

इति चतुर्णिकायदेवेन्द्र अत्र आगच्छत आगच्छत।
इति मण्डलोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

निज-परिवार सहित असुरों के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।1।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय। जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।1।।

निज-परिवार सहित नागों के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।2।।

ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।2।।

निज परिवार सहित विद्युत के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।3।।

निज - परिवार सहित सुपर्ण के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।4।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।4।।

निज - परिवार सहित पावक के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।5।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।5।।

निज-परिवार सहित मारुत के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।6।।

ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।6।।

निज - परिवार सहित मेघों के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।7।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।7।।

निज - परिवार सहित सागर के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।8।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।8।।

निज - परिवार सहित द्वीपों के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।9।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।9।।

निज - परिवार सहित दिक्सुर के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।10।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।10।।

निज - परिवार सहित किन्नर के, इन्द्र जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।11।।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।11।।

किम्पुरुषों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।12।।

ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।12।।

महोरगों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।13।।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।13।।

गन्धर्वों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।14।।

ॐ ह्रीं गन्धर्वेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।14।।

यक्षसुरों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।15।।

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।15।।

राक्षसगण के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।16।।

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।16।।

भूतसुरों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।17।।

ॐ ह्रीं भूतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।17।।

सुरपिशाच के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।18।।

ॐह्रीं पिशाचेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।18।।

ज्योतिषियों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।19।।

ॐ ह्रीं चन्द्रनामकेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।19।।

ज्योतिष देव-प्रतीन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।20।।

ॐ ह्रीं भास्करेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।20।।

इन्द्रामर सौधर्म स्वर्ग के, भक्त जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।21।।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।21।।

इन्द्रामर ईशान स्वर्ग के, भक्त जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।22।।

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।22।।

सनत स्वर्ग के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।23।।

ॐ ह्रीं सनतकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।23।।

इन्द्रामर माहेन्द्र स्वर्ग के, भक्त जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।24।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।24।।

ब्रह्मस्वर्ग के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।25।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।25।।

लान्तवनामा इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।26।।

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।26।।

शुक्रस्वर्ग के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।27।।

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।27।।

शतारेन्द्र शुभभाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।28।।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।28।।

आनतेन्द्र शुभभाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।29।।

ॐ ह्रीं आनतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।29।।

प्राणतेन्द्र शुभभाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।30।।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।30।।

आरणेन्द्र शुभभाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।31।।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।31।।

अच्युतेन्द्र शुभभाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शान्तिप्रभु के पदपंकज की, पूजा नित्य रचावें। ।।32।।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय।
जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।32।।

बत्तीस इन्द्रों से प्रपूजित, शान्तिनाथ जिनेश को।
परिपूर्ण अर्घ्य चढ़ाय पाऊँ, हे प्रभो! शिवलोक को। ।।33।।

ॐ ह्रीं चतुर्णिकायदेवेन्द्रपूजिताय श्री शान्तिनाथाय महार्घ्यम्।।33।।

jjjj

चतुर्थ वलय पूजा प्रारम्भ

स्थापना

हे शान्तिप्रभो ! हे शान्तिप्रभो, मेरे मन मन्दिर में आओ।
अघवर्ग-विनाशन-हेतु प्रभो, निजशान्त दिव्यछवि दर्शाओ। ।।1।।

कर्मों के बन्धन खुलते हैं, प्रभु नाम निरन्तर जपने से।
भव-भोग शरीर विनश्वर तब, क्षणभंगुर लगते सपने से। ।।2।।

नरजन्म सफल हो जाता है, जब ध्यान हृदय में आता है।
आतमस्वरूप में लीन हुआ भव-सागर से तर जाता है। ।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त! सकलविघ्न शान्तिकर! पंचमचक्रेश्वर ! द्वादशकामदेव! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त! षोडशतीर्थंकर! श्री शान्तिनाथ भगवन्! अत्रावतरअवतर सम्वौषट् इत्याह्वानम्! अत्र तिष्ठ - तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मन के विकार सब नाशन हेतु तेरी, पूजा प्रशांत करती लगती न देरी।
हे शान्तिनाथ भगवन्! भवतापहारी, सादर प्रणाम तुमको अघनाशकारी।।
ॐ ह्रीं मानसिक विकारोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।1।।

वाणी प्रयत्नकृत दोष निवारने को, पूजा समर्थ भविजन्म सुधारने को।
हे शान्तिनाथ भगवन्! भवतापहारी, सादर प्रणाम तुमको अघनाशकारी।।
ॐ ह्रीं वाचनिक विकारोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।2।।

कायाकुठार-कृत पाप-प्रणाश-कारी, अर्चन सशक्त सर्वत्र प्रदोषहारी।
हे शान्तिनाथ भगवन्! भवतापहारी, सादर प्रणाम तुमको अघनाशकारी।।
ॐ ह्रीं कायिकपापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।3।।

राज्यश्री, पुर, गेह, नाश सों, होय उपद्रव भारी,
उनके नाशनहेतु प्रभु की, पूजा मंगलकारी।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।4।।
ॐ ह्रीं राज्यलक्ष्मीपुर गेहपद भ्रष्टतोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।4।।

पूर्वोपार्जित कर्म उदय सों, घोर विपत्ति सतावे,
लक्ष्मीहीन दरिद्री नर नित, तीव्र महादुख पावे।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।5।।
ॐ ह्रीं दारिद्रोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।5।।

भीम भगन्दर कुष्ट जलोदर, आदिक रोग घनेरे,
व्याधि उपद्रव कर्म-विनाशन, हेतु जजों पद तेरे।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।6।।
ॐ ह्रीं भीमभगन्दर गलित कुष्ट गुल्म जलोदर रक्त पित्त कफवातस्फोटकाद्युपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।6।।

इष्टवियोग अनिष्टयोग से, जीव महादुख पावे,
निज परिणति को भूले मोही, आर्त रौद्र उपजावे।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।7।।
ॐ ह्रीं इष्टवियोगानिष्टसंयोगोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।7।।

निजसेना व परसेना कृत, घोर उपद्रव आवें,
धर्माराधन-ध्यान-विमुख तव, प्राणि महादुख पावें।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।8।।
ॐ ह्रीं स्वचक्रपरचक्रोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।8।।

नाना आयुध देह विनाशक, घोर उपद्रव आवें,
आर्तरौद्र की परिणति व्यापै, कोई नहीं बचावें।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।9।।
ॐ ह्रीं विविधायुधोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।9।।

जलचर प्राणी दुष्ट नक्र औ, मत्स्य महाभयकारी,
कर्म उदय जल बीच सतावें, व्याकुल हों नर-नारी।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।10।।
ॐ ह्रीं दुष्ट जलचरजीवोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।10।।

वन पर्वत के मध्य चतुष्पद, सिंह गजादिक प्रानी,
आक्रामक बन नित्य सतावें, करें दुष्ट मनमानी।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।11।।
ॐ ह्रीं दुष्ट व्याघ्र सिंह गजादि वन पर्वतवासिश्वापदाद्युपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।11।।

भूचर-खेचर क्रूर जीव-कृत, तीव्र उपद्रव आवें,
आशापाश बँधा यह प्राणी, परपरिणति-लिपटावें।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।12।।
ॐ ह्रीं भूचरगगनचरक्रूर जीवोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।12।।

भीम भुजंगम वृश्चिक भीषण, घोर विषैले प्राणी,
विषम हलाहल दन्त दशन से, पीड़ित हों जगप्राणी।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।13।।
ॐ ह्रीं व्यालवृश्चिकादिविषदुर्द्धरोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।13।।

नखश्रृंगादिक तीक्ष्ण विषैले, जीवों के दुखकारी,
कर्म असाता प्रेरित प्राणी, भुगते दुख अतिभारी।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।14।।
ॐ ह्रीं दुष्टजीवपदकरनखोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।14।।

वन पशुओं के दाढ़ सींग नख, अति विकराल घनेरे,
चञ्चु तुंड दंतादिक कृत दुख, घोर असाता घेरे।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।15।।
ॐ ह्रीं चञ्चुतुण्डदाढ़कण्टकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।15।।

दावानल वन मध्य भयंकर, खग मृग वृक्ष जलावें,
जीव असाता कर्मोदय से, घोर महादुख पावें।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।16।।
ॐ ह्रीं दावानलोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।16।।

घोर प्रचण्ड पवन का दुर्जय, वेग भंयकर धावे,
सागर मध्य प्रचण्ड लहर की, भीम भँवर लहरावे।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।17।।
ॐ ह्रीं प्रचण्डपवनोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।17।।

नौका पोत स्फोट उदधि में, दारुण दुख-प्रदाता,
सागर मध्य पतन जब होवे, कर्म विपाक असाता।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।18।।
ॐ ह्रीं नौकास्फोटपतनोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।18।।

वन पर्वत भू-मण्डल मध्ये, उदित उपद्रव भारी,
प्रभु पूजा से दूर सभी हो, फल हो मंगलकारी।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।19।।
ॐ ह्रीं वननगमेदिनीभयंकरोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।19।।

सरिता सागर कूप सरोवर, झील जलाशय वापी,
इनके उपसर्गो से रक्षण, पाता पीड़ित प्राणी।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।20।।
ॐ ह्रीं नदीसरोवराब्धिकूपह्रदोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।20।।

विद्युत्पाद भयंकर वर्षा, ओला पाला पानी,
दैव विपाक अनेक उपद्रव, पीड़ा की मनमानी।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।21।।
ॐ ह्रीं विद्युत्पातादिभीमाम्बुवृष्ट्युपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।21।।

युद्ध स्थल के मध्य शत्रु दल, शस्त्र अनेक चलावें,
कर्म असात अकाल मरण दुख सब ही प्राणी पावें।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।22।।
ॐ ह्रीं संग्रामस्थलादिनिकटोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।।22।।

डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत अरु, चोर पिशाच घनेरे,
कर्मों के परिपाक विषय सों, रहते निशि दिन घेरे।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।23।।
ॐ ह्रीं डाकिनीशाकिनीभूतप्रेतपिशाचादिभय निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।23।।

उच्चाटन सम्मोहन थम्मन, घोर उपद्रव आवें,
विद्या दुष्ट विविध रूपों में, आकर नित्य सतावें।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।24।।
ॐ ह्रीं मोहनस्तम्भनोच्चाटनप्रमुखदुष्टविद्योपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।24।।

दुष्ट नवग्रह कृत पीड़ाएँ, कर्म उदय से आवें,
अज्ञानी मिथ्यात्वी मूरख, कुगुरु कुदेव मनावें।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।25।।
ॐह्रीं दुष्टग्रहाद्युपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।25।।

लोह-श्रंखला के दृढ़ बन्धन, अंग उपांग दुखावें,
पीड़ित प्राणी महा दुख पाकर, हा-हाकार मचावें।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।26।।
ॐ ह्रीं शृंलाद्युपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।26।।

अल्प आयु कृत कर्म योग से, जन्म मरण दुख भारी,
मन में व्याप्त प्रचण्ड विकलता, दुखिया सब संसारी।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।27।।

ॐ ह्रीं अल्पमृत्यूपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।27।।

कर्म उदय दुर्भिक्ष उपद्रव, अन्नाभाव सतावें,
जठरानल की भीषण ज्वाला, प्राणी को बिलखावें।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।28।।

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।28।।

अन्तराय यह लाभ विरोधी, कर्म उदय जब आवे,
व्यापारादिक वृद्धि न होवे, धन सम्पत्ति नशावे।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।29।।

ॐ ह्रीं व्यापारवृद्धिरहितोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।29।।

सम्बन्धी परिवार भ्रात सुत, बने अकारण वैरी,
घोर उपद्रव करें निरन्तर, व्यापे विपद घनेरी।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।30।।

ॐ ह्रीं बन्धुत्वोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।30।।

अकुटुम्बी संतान बिना नित, अति संक्लेशित होवे,
मिथ्या मोह उदय से प्रेरित, प्राणी रोवे धोवे।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।31।।

ॐ ह्रीं अकुटुम्बत्वोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।31।।

पाप उदय अपकीर्ति दुखद हो, आकुलता उपजावे,
मन संताप महा दुख ज्वाला, सब सुख शांति जलावे।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मनमन्दिर में धारें,
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें। ।।32।।

ॐ ह्रीं अपकीर्त्युपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।32।।

विश्व हिताय उदार भावना, निर्मल मंगल कारी,
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित यह, हो सदैव हितकारी।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभु की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।33।।

ॐ ह्रीं सम्पूर्णकल्याणमंगलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।33।।

चिंतामणि के तुल्य लाभप्रद, शांति प्रभु को ध्यावे,
करे अर्चना नित्य चाव से, अतिशय शुभ फल पावे।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।34।।

ॐ ह्रीं चिन्तामणिसमानचिन्तितफलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।34।।

कल्प-वृक्ष के समफल-दाता, पाप-ताप विनशाये,
शांति जिनेश्वर का आराधन, शुभ मंगल महकाये।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।35।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षोपमकल्पितार्थफलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।35।।

कामधेनु के तुल्य अनूपम, सर्व मनोरथ - दाता,
यही अर्चना मंगलकारी, सुख आनन्द प्रदाता।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।36।।

ॐ ह्रीं कामधेनूपमकामनापूर्णफलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।36।।

परम समुज्ज्वल ध्यान धरे तो, मेटे पथ की बाधा,
यही अर्चना मंगलकारी, हर लेती दुख बाधा।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।37।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलधर्मध्यानबाधारहिताय अनवद्यबोधप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।37।

त्रैलोक्य के सब प्राणियों को, नेत्र का उत्सव करे,
मनसिज-सदृश सौन्दर्य पावे, जो प्रभु पूजा करे।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।38।।

ॐ ह्रीं कामदेवस्वरूपप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।38।।

कर्पूर चन्दन अगरु पंकज, तुल्य सुरभित देह हो,
यदि शान्ति जिनकी अर्चना में, अमल निश्चल नेह हो।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।39।।

ॐ ह्रीं सुगन्धितशरीरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।39।।

भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, नाथ का भामण्डलम्,
रवि रश्मिवत् करता प्रकाशित, शांतिजिन गुणमण्डलम्।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।40।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथाह्लादकारकपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।40।।

क्षीर सागर की समुज्ज्वल, अमल लहरों से धवल,
देवता गाते निरन्तर, आपके सद्‌गुण विमल।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।41।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलगुणगणसहितपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।41।।

वाचस्पति के तुल्य निर्मल, विशद्-प्रतिभादायिनी,
आपकी है अर्चना ज्यों, पूर्णिमा की चाँदनी।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।42।।

ॐ ह्रीं वाचस्पतिसमानपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।42।।

नवनिधि चतुर्दश रत्न का, स्वामित्व जो चक्रेश को,
नर देव इन्द्र नरेन्द्र वन्दित, पूजता तीर्थेश को।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।43।।

ॐ ह्रीं चक्रवर्तिपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।43।।

दोनों कुलों की कीर्ति को, निज गुण विभूषित जो करें,
मुक्तिरमा वरती उन्हें जो, शान्ति जिन पूजा करें।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।44।।

ॐ ह्रीं उभयकुलकमलविकासन प्रतिष्ठितगुणमण्डिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।44।

अर्चना शुभ भाव से, अरिहन्त की जो नित करें,
श्रावकोत्तम व्रतधरन, सद्‌बुद्धि को वे नर वरें।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।45।।

ॐ ह्रीं श्रावकसद्‌वृत्तकरणबुद्धिप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।45।।

शारदी नव ज्योत्स्ना-सम, कीर्ति का विस्तार हो,
प्रभु अर्चना ही मात्र इक, जो प्राण का आधार हो।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।46।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलकीर्तिप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।46।।

कल्याण कर्त्री राज लक्ष्मी, धनद सम वे नर वरें,
जिनराज की शुभ भावना से, जो सतत पूजा करें।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।47।।

ॐ ह्रीं कल्याणकर राजधनदसमलक्ष्मीप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।47।।

तिर्यंच नारक भव कभी, जिन भक्त को मिलता नहीं,
नर देव भव शुभ लोक में, प्रभु भक्त पाते हर कहीं।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।48।।

ॐ ह्रीं नरकतिर्यंचगतिरहितनरसुरगतिसहितभवप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।48।।

भावना षोडश विमल प्रभु, अर्चना से प्राप्त हो,
तीर्थकर पदवी मिले, जिससे कि निश्चय आप्त हो।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।49।।

ॐ ह्रीं षोडशकारणभावनासाधनबलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।49।।

लोक दुर्लभ स्वप्न सोलह, नाथ माता देखती,
एक जननी पद प्रसव पूजा, सहित अवलोकती।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।50।।

ॐ ह्रीं जिनजननीतुल्यैकजननीपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।50।।

तीर्थेश वन सुर शैल पर, होता विशद अभिषेक है,
जिन अर्चना का हृदय जिनके, प्रकट विमल विवेक है।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।51।।

ॐ ह्रीं मेरुशिखरे स्नानयुक्तपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।51।।

संसार भोग शरीर से, निर्वेद दीक्षा-दायकम्,
नर जन्म प्रभु की अर्चना से, मिले शुभशिव कारकम्।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।52।।

ॐ ह्रीं सिद्धसाक्षिदीक्षाकारिभवप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।52।।

जिन चन्द्र के सालोक शासन, के असीम प्रभाव से,
वज्र वृषभ नाराच संहनन मिले पूजन भाव से।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।53।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।53।।

रत्नत्रयामृत से विभूषित, ध्यान के उपयोग से,
निर्मल यथा विख्यात हो, जिन अर्चना के योग से।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।54।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातरत्नत्रयाचरणयुक्तबलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।54।।

निज ध्यान में तल्लीन आतम, स्वाद अमृत चख सके,
तीर्थेश शान्तिजिनेशपूजन से निजातम लख सके।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।55।।

ॐ ह्रीं स्वात्मध्यानामृतस्वाद सहितभवप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।55।।

राजती बारह सभा जिन, समवसरणे सर्वदा,
त्रैलाक्य पति की अर्चना से, प्राप्त होती सुख प्रदा।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।56।।

ॐ ह्रीं समवशरणविभूतिपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।56।।

जिन राज प्रभु की दिव्य-ध्वनि, दिनरात में चौ बार हो,
जिसका श्रवण कर भविक को, कैवल्य अपरम्पार हो।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।57।।

ॐ ह्रीं सत्केवलज्ञानविभूतिपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।57।।

अष्ट कर्मों से रहित, गुण अष्ट युत परमात्मा,
निर्भय निरञ्जन सिद्ध पद, पाता सुधी धर्मात्मा।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।58।।

ॐ ह्रीं निरंजनपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।58।।

चित्त को आनन्द देती नाथ की दिव्यार्चना,
प्रभु के पुजारी की करें, सुर लोक में सुर वन्दना।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।59।।

ॐ ह्रीं चिदानन्दकरणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।59।।

जिनके विमल मुखचन्द्र से, अमृतवचन अनुपम झरें,
त्रैलोक्य की निधियाँ सकल, प्रभु के पुजारी को वरें।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।60।।

ॐ ह्रीं वचनानन्दकरणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।60।।

जिननाथ के तन की अलौकिक, दिव्य अणु-अणु की प्रभा,
देखकर होती प्रफुल्लित, हर्ष से बारह सभा।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।61।।

ॐ ह्रीं कायानन्दकरणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।61।।

सर्वार्थ वर्गों का प्रसाधक, नाथ मनसा चिन्तनम्,
तीर्थेश की दिव्यार्चना का, है महत् अतिशय फलम्।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।62।।

ॐ ह्रीं अर्थवर्गसिद्धिसाधनकरणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।62।।

प्रभु के गुणों का संस्तवन, निज वाणि - वीणा से करें,
वे काम-वर्ग-प्रसाधिनी, उत्कृष्ट महिमा को वरें।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।63।।

ॐ ह्रीं कामवर्गसिद्धिसाधनकरणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।63।।

जिननाथ पूजा से सफल, निज देह को जो नर करें,
आश्चर्य क्या यदि मोक्ष लक्ष्मी, को सहज ही वे वरें।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।64।।

ॐ ह्रीं मोक्षपुरुषार्थसिद्धसाधनकरणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।64।।

निर्लिप्त श्री जिनराज चौसठ, ऋद्धियों के नाथ हैं,
शत इन्द्र के झुकते सतत्, पद पंकजों में माथ हैं।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।65।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमानांगाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।65।।

शत एक विंशति तीर्थकर, जिनचन्द्र की पूजा करें,
विघ्नौघ के शान्त्यर्थ मैं, पूर्णार्ध्य चरणों में धरें।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना,
श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।। ।।66।।

ॐ ह्रीं शतैकविंशतिकोष्ठस्थापिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।66।।

अरिहन्त के अतिरिक्त कोई, है नहीं जग में शरण।
संसार सागर में प्रभु के, चरण हैं तारण तरण।।

इतीष्टप्रार्थना कृत्वा पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाल

शान्तिनाथ भगवान ! के, गुण हैं अपरम्पार।
निराधार संसार में, भक्तों के आधार।।
पंचम श्री चक्रीश हैं, द्वादशवे रतिनाथ।
षोडशवे तीर्थेश को, सदा नवाऊँ माथ।।

जय शांति प्रभो चिद्रूपराज ! जग जल निधि में अद्भुत जहाज।
जय कर्म विनाशक शांतिनाथ! जयविघ्न विनाशक शांतिनाथ! ।।1।।

जय गुण वारिधि हे शान्तिनाथ! जय मुक्तिवधू के प्राणनाथ।
जय आत्म हितंकर शान्तिनाथ! जयकर्म विनाशक शांतिनाथ! ।।2।।

जय पाप विनाशक शान्तिनाथ! भुवनत्रय-ज्ञायक शान्तिनाथ!
जय सम्यग्दायक शान्तिनाथ! शिवमार्ग-विधायक शांतिनाथ! ।।3।।

जय भवगृहभंजन शांतिनाथ! जय अलख निरंजन शांतिनाथ!
जय ऐरासुत श्री शांतिनाथ! त्रिभुवनत्राता हितु शांतिनाथ! ।।4।।

जय शांतिनाथ! शिव के दायक, जय हित-संदेशक अघहारक।
जय जन्म जरा-मृतु-संहारक, जय रोग -शोक हर सुखदायक।।5।।

शिवसुख के साधन शान्तिनाथ! भव भय के भञ्जक शान्तिनाथ!
जय मानबली के मद मर्दक, जय शांतिनाथ गुण गण वर्धक।।6।।

कर्मों के दुख-संहारक हो! भय भूत पिशाच निवारक हो।
नवग्रहकृत-बाधा दूर करो, व्यालादि-विपति चकचूर करो।।
जय भव्यसरोज दिवाकर हो, जय शिवसुखपद्म-प्रभाकर हो
भव जीवन तारण कारण हो, जय शांतिनाथ सुख साधन हो ।।7।।

ॐ ह्रीं जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय जयमालाये महार्घ्यं नि. स्वाहा।

पाप-पंक में मग्न, विश्व के हैं सब प्राणी,
मल-प्रक्षालन-हेतु, नाथ की मंगल वाणी।
प्रभु पद पंकज में जलधारा, अर्पित करते जो प्राणी,
होती निश्चय नित्य विश्व में, शांतिसुधा वह कल्याणी।।

।।इति शान्तिधारा आशीर्वाद।।

ॐ ह्रीं जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रवशांतिं कुरु कुरु ह्रीं नमः स्वाहा।

(108 बार जाप करें)

शान्ति पाठ

चौपाई

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील - गुणव्रत-संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजे, निरखत नयन कमलदल लाजे।।
पञ्चम चक्रवर्तीपद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमो शान्तिहित शान्ति विधायक।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।
शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शान्ति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को।।

बसन्ततिलका

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शान्तिनाथ वरवंश जगतप्रदीप,
मेरे लिये करहिं शान्ति सदा अनुप।।

इन्द्रवज्रा

सम्पूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेशको ले, कीजै सुखी हे जिन शान्तिको दे।

स्रग्धरा छन्द

होवै सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा,
होवै वर्षा समय पै, तिलभर न रहै, व्याधियों का अन्देशा।
होवै चोरी न जारी, सुसमय बरतै हो न, दुष्काल भारी,
सारे ही देश धारैं, जिनवर-वृषको जो, सदा सौख्यकारी।।

दोहा

घातिकर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।

मन्दाक्रान्ता

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का,
सद्वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ,
तो लौं सेऊँ, चरण जिनके, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ।।

आर्या

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहों प्रभु, जब लौं न पाया मुक्ति पद मैंने।।
अक्षर पद मात्रा से दूषित, सो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब करुणा करि, पुनि छुड़ाहु भवदुख से।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर ! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।

शान्तिभक्ति समाधिभक्ति पठित्वा कायोत्सर्गं करोम्यहम् पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

विसर्जन

बिन जाने व जानके रही टूट जो कोय।
तुम प्रसादतैं परम गुरु सो सब पूरन होय।।1।।

पूजन विधि जानूँ नहीं नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं क्षमा करहु भगवान ।।2।।

मन्त्रहीन धनहीन हूँ क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे देहु चरणकी सेव।।3।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि परमेष्ठिन: पूजाविधिं विसर्जनं करोमि अपराध क्षमापणं भवतु ज: ज: ज:।

(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें)

(निम्नांकित छन्द पढ़ते हुये गवासन मुद्रा से अर्हंत भगवान को नमोऽस्तु करके आशीर्वाद लेते हुए कायोत्सर्ग पूर्वक कार्य पूर्ण करें।)

श्री जिनवर जी की आशिका, लीजै शीश चढ़ाय।
भव भव के पातक कटैं, दु:ख दूर हो जाय।।

विसर्जन

पूजा का समापन ही विसर्जन है। पूर्व में पूजन का संकल्प पंचमहागुरु भक्ति पूर्वक करके, सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति पूर्वक पूजन करते हुये अन्त में शांति एवं समाधि भक्ति पूर्वक पूजन को पूर्ण करते हैं। पूजन अनुष्ठान क्रिया में होने वाली त्रुटियों, असावधानियों/अज्ञानता के लिए प्रभु चरणों में क्षमायाचना करके मंत्र पूर्वक ठोने पर पुष्प क्षेपण करके पूजन की विसर्जन क्रिया करना चहिए।

(''पुष्पाञ्जलि''से)

jjjj

भजन

कर तू प्रभु का ध्यान बाबा कर तू प्रभु का ध्यान - 2
निज घट में भगवान बाबा निजघट में भगवान।। टेक।।

काँटों में भी जीवन तेरा फूलों सा खिल जायेगा
खोज रहा है जिसको तू वह पल भर में मिल जायेगा
खुद को तू पहिचान बाबा खुद को तू पहिचान

कभी किसी का दिल दु:ख जाये ऐसे बोल कभी मत बोल
घावों पर मलहम बन जायें ऐसे बोल बड़े अनमोल
कहलाता यह ज्ञान बाबा कहलाता यह ज्ञान - 2

धन वैभव यह महल खज़ाना कुछ भी साथ न जायेगा
सुबह खिला जो फूल बाग में साँझ समय मुरझाएगा
कर ले धर्मध्यान बाबा करले धर्मध्यान - 2

मात पिता गुरुजन कर आदर धर्ममार्ग पर चलो सदा
गुरुजन की नित सेवा करना श्रावक का कर्तव्य कहा
पाओगे सम्मान बाबा पाओगे सम्मान

जिसको अपना कहा आज तक हुआ कभी न वह अपना
जिसकी खातिर जिया आज तक वह निकला सुंदर सपना
क्यों तू करे गुमान बाबा क्यों तू करे गुमान

राग - द्वेष भावों के कारण भवसागर में डूब रहा
गँवा रहा भोगों में जीवन फिर भी मन नहिं ऊब रहा
क्यों बनता नादान बाबा क्यों बनता नादान

हिंसा-झूँठ-कुशील-परिग्रह- चोरी ये मत पाप करो
पाप विनाशक धर्म प्रकाशक णमोकार का जाप करो
हो सम्यक् श्रद्धान बाबा हो सम्यक् श्रद्धान - 2

मुनि श्री द्वारा रचित साहित्य की तालिका

1. **तन्मयता की बेला - (पूजन शिविर)** — मूल्य 20 रु. 192 पेज
आज की नवीन पीढ़ी के लिए विधिपूर्वक आगमानुसार भगवान की पूजन करने का सही ढंग, जिसमें भक्तामर स्तोत्र, स्वप्न फल, सूतक पातक एवं नये ढंग से मधुरमय अर्घावली

2. **भक्तामर स्तोत्र - (भक्तामर शिविर)** — मूल्य 18 रु. 192 पेज
शुद्ध भक्तामर स्तोत्र को सही ढंग से तोड़कर लिखा गया है जिसमें नई धुन पर पाँच तरह का पद्यानुवाद है, ऋद्धि मंत्र व फल विवेचन भी है।

3. **दैनिक कर्तव्य -** — मूल्य 30 रु. 320 पेज
श्रावक के करने योग्य सभी स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, सामायिक पाठादि, द्रव्य संग्रह, इष्टोपदेश, चौघडिया, सूतक पातक आदि

4. **आस्था के स्वर -** — मूल्य 10 रु. 100 पेज
108 नवीन भजन मुनि श्री द्वारा रचित

5. **समंदर की लहरें -** — मूल्य 10 रु. 100 पेज
लगभग 100 भजन मुनि श्री द्वारा रचित

6. **अंतस् का पराग -** — मूल्य 10 रु.
लगभग 80 भजन मुनि श्री द्वारा रचित

7. PHILOSOPHY OF KARMA -**कर्म विज्ञान -** — मूल्य 15 रु.
कर्मो का विवेचन प्रश्नोत्तर में - मुनि श्री द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद

8. **बोलती कविताएँ-** — मूल्य 100 रु. 150 पेज
मुनि श्री द्वारा लगभग 190 स्व रचित कविताएँ साहित्यिक - धार्मिक एवं व्यंगात्मक

9. **जमाने का सच-** — मूल्य 30 रु. 120 पेज
मुनिश्री द्वारा नये नये चिंतनों का अनूठा संकलन एवं मुनि श्री के दीक्षा चित्र व उनके विशेष अनुभव

10. **हकीकत का पैगाम -** — मूल्य 30 रु. 120 पेज
मुनि श्री द्वारा मंथन का निचोड़ व तर्क के आधार पर नये - नये अनूठे विचारों का संगम

11. **ज़िंदगी क्या है? -** — मूल्य 15 रु.
मुनि श्री का रंगीन चित्र एवं ज़िंदगी के बारे में महत्वपूर्ण तीन प्रवचनों का संकलन

12. **सच क्या है? -** — मूल्य 15 रु.
तेरा पंथ-बीस पंथ और विशाल सच का स्वरूप, मूढ व मूर्ख में, भूले व भोले में अंतर - सच्चा धर्म और झूठा पंथ का अहंकार क्या है?

13. **ख़ज़ाने के मोती -** — मूल्य 30 रु. 105 पेज
मुनि श्री द्वारा रचित उर्दू में गज़लें लगभग 102 सभी तर्जों में रचित, शेर व मुक्तक

14. **तासीर के मंजर -** — मूल्य 30 रु. 105 पेज
मुनि श्री द्वारा रचित उर्दू में गज़लें लगभग 102 सभी तर्जों में रचित, शेर व मुक्तक

15. **What is Life -** — मूल्य 20 रु.
मुनि श्री द्वारा प्रवचन की पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद

16- **What is truth** & — मूल्य 25 रु.
मुनि श्री द्वारा लिखित पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद

17. **जानिये सम्यक् दीपावली -** — मूल्य 10 रु.
सही तरीके से दीपावली मनाने की विधि

18. **Moral Science for Children** — मूल्य 50 रु.
Part I,II,III मुनि श्री द्वारा **English Translation**

19. **English Quatation** — मूल्य 10 रु.
मुनि श्री द्वारा **English** में रचित सूक्तियों धार्मिक एवं व्यावहारिक

20. **सामायिक पाठ -** — मूल्य 5 रु.
संस्कृत/हिंदी पद्यानुवाद व प्रतिक्रमण

21. **गा लो गुरु गुणगान -** — मूल्य 15 रु. व 25 रु.
मुनि श्री द्वारा लिखित 4 पूजन व भजन

22. **अपना भविष्य जानो (Know your Future)** — मूल्य 15 रु.
मुनि श्री द्वारा लिखित हिन्दी व **English** में

23. **ऐसा क्यों ?** — मूल्य 31 रु.
युवा पीढ़ी की नई शंकाओं के तर्क सहित अनूठे और सटीक उत्तर

24. **होनी अनहोनी** — मूल्य 15 रु.
जीवन है पानी की बूँद, जीवन जलता दिया यहाँ, गुरुवर का आशीष हमें, जीवन चलती साँस यहाँ एवं अंग्रेजी में भजन व सूक्तियाँ

25. **स्वर्ग नरक** — मूल्य 15 रु.
स्वर्ग-नरक क्या है विशेष प्रवचन

26. **विराग सुमन** - अप्राप्य

27. **विराग वंदना** - अप्राप्य

28. **सच्चे ज्ञान की पहिचान -**
मुनिश्री द्वारा लिखित सच्चा ज्ञान क्या है?

प्राप्ति स्थान

सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ, भिण्ड

श्री देवेन्द्र जैन
बड़ी बजरिया, बीना (सागर)
फोन - 07580-223344

सीपुर समता तीर्थ धाम
सीपुर
9828613614